उद्धार परमेश्वर से होता है

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

भजन संहिता 3:8 उद्धार यहोवा ही से होता है; हे यहोवा तेरी आशीष तेरी प्रजा पर हो। योना 2:9 उद्धार यहोवा ही से होता है!”

रोमियों 8:28-30 का अध्ययन : हम जानते हैं कि जो लोग **परमेश्वर से प्रेम** रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार **बुलाए** हुए हैं। 29 क्योंकि जिन्हें उसने **पहले से जान** लिया है उन्हें **पहले से ठहराया** भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे। 30 फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें **बुलाया** भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें **धर्मी भी ठहराया** है; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें **महिमा** भी दी है।

यशायाह 46:11 ... **मैं ही ने यह बात कही है** और **उसे पूरी भी करूँगा;** मैंने यह विचार बाँधा है और उसे **सफल भी करूँगा**। यशायाह 55:11 भी देखें

रोमियों 8:28 हम जानते हैं कि जो लोग **परमेश्वर से प्रेम** रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार **बुलाए हुए हैं।**

I. वे कौन हैं जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं?

रोमियों 8:28 जो उसकी इच्छा (या उसकी योजना) के अनुसार **बुलाए हुए हैं।**

II. वह किसे बुलाता है?

रोमियों 8:29 **जिन्हें उसने पहले से जान लिया है** जिन्हें वह उनके जन्म से पहले से ही अर्थात सनातन से जानता था। जिनके नाम उस मेमने के जीवन की पुस्तक में जगत की उत्पत्ति के समय से लिखे गए हैं। प्रकाशितवाक्य 13:8 और 17:8

इफिसियों 1:4 **जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले** उसमें **चुन लिया कि हम** उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों (पूर्व निर्धारित)।

1 पतरस 1:1- 3 उन ... के नाम जो परमेश्वर पिता के **भविष्य ज्ञान** के अनुसार, **चुने गए हैं।** ... जिसने यीशु मसीह के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा, अपनी बड़ी दया **से हमें** जीवित आशा के लिये **नया जन्म** दिया

- यूहन्ना 15:16 तुम ने **मुझे** नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है

III. आप पूर्व निर्धारित हैं ...

रोमियों 8:29 जिन्हें **उसने** पहले से जान लिया है उन्हें **पहले से ठहराया** भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों यशायाह 46:11 **मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैंने यह विचार बाँधा है और उसे सफल भी करूँगा।**

IV. उसने आपको बुलाया है।

रोमियों 8:30 जिन्हें **उसने** पहले से ठहराया, उन्हें **बुलाया** भी

1 कुरिन्थियों 1:9 परमेश्वर सच्चा है, जिसने **तुम को** अपने पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह की **संगति में बुलाया है।**

रोमियों 1:6 जिनमें से **तुम भी यीशु मसीह के होने के लिये बुलाए गए हो।**

- उसकी यह प्रबल बुलाहट आपके हृदय के लिए थी, आपके दिमाग के लिए नहीं। आप उसका नाम इसलिए पुकारते हैं क्योंकि उसने पहले आपको बुलाया।

  1 कुरिन्थियों 1:2 परमेश्वर की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस में है, अर्थात् उनके नाम जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए, और **पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं;** और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने **प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।**

1 थिस्सलुनीकियों 5:24 **तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है,** और वह **ऐसा ही करेगा।**

- कोई भी ऐसा नहीं होगा जो उसकी बुलाहट का प्रत्युत्तर न दे

  यूहन्ना 6:37 जो कुछ पिता मुझे देता है वह **सब मेरे पास आएगा,** और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा।

  यूहन्ना 6:39 मेरे भेजनेवाले **की इच्छा** यह है कि **जो कुछ** उसने मुझे दिया है, उस में से **मैं कुछ न खोऊँ,** परन्तु उसे अंतिम दिन फिर जिला उठाऊँ।

  यूहन्ना 18:9 ...जिन्हें तू ने मुझे दिया उनमें से **मैं ने एक को भी न खोया।**

  यूहन्ना 10:3 उसके लिये द्वारपाल द्वार खोल देता है, और **भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं,** और **वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है** और बाहर **ले जाता है।**

  यूहन्ना 10:4 जब **वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल चुकता है,** तो उनके आगे आगे चलता है, और **भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं,** क्योंकि **वे उसका शब्द पहचानती हैं।**

यूहन्ना 10:26-29 परन्तु तुम इसलिये विश्वास नहीं करते क्योंकि मेरी भेड़ों में से नहीं हो। 27 **मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं;** मैं उन्हें जानता हूँ, और **वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं;** 28 और मैं उन्हें **अनन्त जीवन देता हूँ।** वे कभी **नष्ट न होंगी,** और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।

V. विश्वास परमेश्वर की ओर से वरदान है

इब्रानियों 12:2 **विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु** की ओर ताकते रहें

कर्ता – वह जो उत्पन्न करता या सृजता है

गलातियों 3:23 पर **विश्वास के आने से पहले** व्यवस्था की अधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और **उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होनेवाला था,** हम उसी के बन्धन में रहे।

- विश्वास हमारे पास आया। यह हमारे भीतर से नहीं आया या हमारे द्वारा नहीं आया।

मत्ती 16:15-17 "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?" 16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" 17 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; **क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने** जो स्वर्ग में है, **यह बात तुझ पर प्रगट की है।"**

- इसी लिए यह जानकर पतरस ने ये लिखा :

2 पतरस 1:1 शमौन पतरस की ओर से, जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, **उन लोगों के नाम जिन्होंने** हमारे परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की धार्मिकता द्वारा हमारे समान बहुमूल्य **विश्वास प्राप्त किया है:**

रोमियों 12:3-4 **परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है**

फिलिप्पियों 1:29 क्योंकि मसीह के कारण **तुम पर यह अनुग्रह हुआ** कि **न केवल उस पर विश्वास करो** पर उसके लिये दुःख भी उठाओ

1 पतरस 1:21 ***उसके द्वारा तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो,** जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी **कि** तुम्हारा **विश्वास** और **आशा** परमेश्वर पर हो। (*उससे या उसके द्वारा – कार्य करने का माध्यम)

इफिसियों 2:8 क्योंकि **विश्वास** के द्वारा **अनुग्रह** (परमेश्वर का मुफ्त वरदान) ही से तुम्हारा **उद्धार** हुआ है; **और यह तुम्हारी ओर से नहीं,** वरन् परमेश्वर का **दान** है

- **अनुग्रह** ही से इस बात को स्पष्ट करता है कि **उद्धार स्वयं हमारी ओर से नहीं है।** क्योंकि उद्धार विश्वास के द्वारा होता है इसलिए **विश्वास "हमारी ओर से" नहीं हो सकता।** अन्यथा उद्धार हमारे ऊपर ही निर्भर होता।

- इस बात को स्पष्ट करने के लिए पवित्र आत्मा ने "यह तुम्हारी ओर से नहीं" को जोड़ा, **जो स्पष्ट रूप से अपने पहले आई संज्ञा — "विश्वास"** के साथ जुड़ा है, और यह हमारी ओर से नहीं है परन्तु **"परमेश्वर का दान है"**, जैसे अनुग्रह के द्वारा यह बताता है कि उद्धार हमारी ओर से नहीं है। **"और यह"** का संकेत **उद्धार हुआ है** की ओर नहीं है क्योंकि **हुआ है** की क्रिया पहले ही इस बात को स्पष्ट करती है कि हमने उद्धार पाने की क्रिया **प्राप्त कर ली है,** इसलिए "और यह हमारी ओर से नहीं" की कोई आवश्यकता नहीं थी सिवाय इस बात को छोड़ कि **विश्वास हमारी ओर से नहीं है।**

- यूहन्ना 15:5 ... मुझ से अलग होकर **तुम कुछ भी नहीं कर सकते।** यदि कुछ भी नहीं का अर्थ "कुछ भी नहीं" है, तो मैं सोचता हूँ इसमें विश्वास और विश्वास करना भी शामिल है। ये दोनों परमेश्वर का **दान है**

- 1 कुरिन्थियों 4:7 ... **और तेरे पास क्या है जो तू ने नहीं पाया?**
  इसमें विश्वास शामिल है

- यूहन्ना 3:27 ... जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न **दिया जाए,** तब तक वह कुछ नहीं पा सकता।
  इसमें विश्वास शामिल है

2 थिस्सलुनीकियों 2:13 ... परमेश्वर ने आरम्भ ही से **तुम्हें चुन लिया** है कि आत्मा के द्वारा (1) पवित्र बन कर **और** (2) सत्य पर **विश्वास** करके (दो बातें) **उद्धार** पाओ।

- पवित्र बनाया जाना आत्मा के द्वारा होता है। "और" शब्द पवित्र बनाने और विश्वास को आपस में जोड़ता है जिसका अर्थ यह निकलता है कि **विश्वास भी आत्मा के द्वारा आता है और मनुष्य से नहीं उपजता।**

याकूब 2:5 हे मेरे प्रिय भाइयो, सुनो। क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं **चुना** कि **विश्वास में धनी** और उस राज्य के अधिकारी हों

1 कुरिन्थियों 1:30 **परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो,** जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा

VI. यह जानकर कि हम परमेश्वर से क्यों प्रेम रखते हैं, इसलिए :

1 तीमुथियुस 6:12 विश्वास की अच्छी कुश्ती लड़; और उस **अनन्त जीवन को धर ले, जिसके लिये तू बुलाया गया** और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा अंगीकार किया था।

1 थिस्सलुनीकियों 2:12 कि तुम्हारा चाल-चलन **परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।**

2 थिस्सलुनीकियों 2:14 जिस के लिये उसने तुम्हें **हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया**, कि तुम हमारे **प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो।**

इब्रानियों 9:15 इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, **बुलाए हुए लोग** (सीमित, सब नहीं) **प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।**

1 पतरस 2:9 पर **तुम** एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिये कि जिसने **तुम्हें अन्धकार में से** अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।

1 पतरस 3:8-10 अतः सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखनेवाले, और करुणामय, और नम्र बनो। 9 बुराई के बदले बुराई मत करो और न गाली के बदले गाली दो; पर इसके विपरीत **आशीष ही दो,** क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने **के लिये बुलाए गए हो।**

प्रेरितों के काम 2:39 क्योंकि **यह प्रतिज्ञा तुम**, और **तुम्हारी सन्तानों**, और **उन सब** दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको (सीमित) प्रभु हमारा परमेश्वर **अपने पास बुलाएगा।"**

इफिसियों 4:1-3 इसलिये मैं जो प्रभु में बन्दी हूँ तुम से विनती करता हूँ कि जिस **बुलाहट से तुम बुलाए गए थे,** उसके योग्य चाल चलो, 2 अर्थात् सारी दीनता और नम्रता सहित, और धीरज धरकर प्रेम से एक दूसरे की सह लो; 3 और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।

VII. उसने आपको धर्मी ठहराया

रोमियों 8:30 और **जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी** भी **ठहराया है**

रोमियों 3:24 परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में हैं, सेंत-मेंत **धर्मी ठहराए जाते हैं।** 5:9 अतः जब कि हम अब **उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे,** तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध **से** क्यों न **बचेंगे?**

रोमियों 5:1-3 अतः जब हम **विश्वास से धर्मी ठहरे,** तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, 2 **जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह** तक जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हुई, और **परमेश्वर की महिमा** की आशा पर घमण्ड करें।

VIII. और उसने महिमा दी है

रोमियों 8:30 जिन्हें धर्मी ठहराया, **उन्हें महिमा भी दी है।**

जब बाइबल महिमा की बात करती है तो इसके तीन अलग-अलग अर्थ होते हैं :

1. **सम्मान** देना, दूसरों की दृष्टि में किसी को ऊँचा स्थान देना

   यूहन्ना 17:1 यीशु ने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा, "हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है; **अपने पुत्र की महिमा कर** कि **पुत्र भी तेरी महिमा करे**

   2 थिस्सलुनीकियों 1:11-12 इसी लिये हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना भी करते हैं कि हमारा परमेश्वर तुम्हें इस बुलाहट के योग्य समझे, और भलाई की हर एक इच्छा और विश्वास के हर एक काम को सामर्थ्य सहित पूरा करे, ताकि हमारे परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार **हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए,** और **तुम उस में।**

2. **स्वर्ग** को **महिमा** कहा गया है

   भजन 73:24 अपनी सम्मति के द्वारा तू मेरी अगुवाई करेगा, और अन्त में **मुझे महिमा में ग्रहण करेगा।**

   इब्रानियों 2:10 ... बहुत से पुत्रों को **महिमा** में पहुँचाए

3. वे जो स्वर्ग (महिमा) में हैं **महिमा पाएंगे**

   परमेश्वर पिता की **उपस्थिति** के कारण, जो परम सिद्ध, परम सुंदर और परम वैभवशाली है और इस कारण स्वयं **महिमामय** है, हर एक व्यक्ति और वस्तु जो भी उसकी उपस्थिति में होती है वह सिद्ध, सुंदर और **महिमामय** होनी चाहिए और हैं।

   यूहन्ना 17:4-5 जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके **मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।** [5] **अब हे पिता,** तू अपने साथ **मेरी महिमा** उस **महिमा** से कर जो जगत की सृष्टि से **पहले,** मेरी तेरे साथ थी।

   इस पद में यीशु **अपनी ईश्वरत्व** को और अपने **अस्तित्व** को बताता है जो जगत की सृष्टि से पहले परमेश्वर पिता के साथ उसका था। मुहम्मद, बुद्ध और किसी भी धर्म के किसी अगुवे ने न तो कभी ऐसा दावा किया और न ऐसा कर सका।

   इस पद का अर्थ दोनों प्रकार की महिमा से है।

1) यीशु ने अपने पिता की आज्ञा को मानकर और उस कार्य को करके जो उसको सौंपा गया था, पिता का आदर किया। हमसे भी यह आशा की जाती है कि हम आज्ञाओं को मानकर और ऐसे जीवन के द्वारा अपने पिता और प्रभु यीशु को महिमा दें, जो दूसरों की दृष्टि में यीशु के नाम को ऊँचा करता और यीशु तथा हमारे पिता का आदर करता हो।

यूहन्ना 15:8 मेरे **पिता की महिमा** इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।

1 कुरिन्थियों 10:31 **चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।**

2) अपना कार्य समाप्त करके यीशु ने कहा : 5 **अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा** उस **महिमा** से कर जो जगत की सृष्टि से **पहले**, मेरी तेरे साथ थी।

- ध्यान दें, यीशु ने कहा : अपने साथ **मेरी महिमा कर**। परमेश्वर की उपस्थिति में **हर एक जन** और **हर एक वस्तु** महिमामय है। **महिमामय** होने को छोड़ स्वर्ग में प्रवेश करने का या वहां होने का **कोई और उपाय नहीं है।**
- रोमियों 8:17 जबकि हम वास्तव में उसके साथ दुख उठाते हैं (इसके द्वारा उसका आदर होता है) कि **उसके साथ महिमा भी पाएं।**
- वे जो उसके हैं जब स्वर्ग पहुंचेंगे तो उन्हें महिमान्वित देह प्राप्त होगी।

1 कुरिन्थियों 15:42-44 मृतकों का जी उठना भी ऐसा ही है। नश्वर देह बोई जाती है और अविनाशी देह जिलाई जाती है। 43 अनादर के साथ बोई जाती है और **महिमा के साथ** जिलाई जाती है, निर्बल दशा में बोई जाती है और सामर्थ्य में जिलाई जाती है, 44 स्वाभाविक दशा में बोई जाती है और आत्मिक दशा में जिलाई जाती है। जबकि स्वाभाविक देह है तो आत्मिक देह भी है।

प्रभु की दृष्टि में जो आदि से अंत को देखता है

यह समाप्त है!

रोमियों 8:30 जिन्हें धर्मी ठहराया, **उन्हें महिमा भी दी है।**

अतः **उसने हमारा उद्धार किया;** और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार हुआ। तीतुस 3:5

यह वैसा है जैसा यीशु ने कहा, "पूरा हुआ!" यूहन्ना 19:30

जैसा पवित्र आत्मा ने यशायाह 46:11 में भविष्यवक्ता के द्वारा कहा है।

मैं ही ने यह बात कही है और **उसे पूरी भी करूँगा; मैंने** यह विचार बाँधा है और **उसे सफल भी करूँगा।** यशायाह 55:11 भी देखें

> उद्धार यहोवा ही से होता है!" योना 2:9

सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर पिता है। वह अपनी संतानों से प्रेम रखता है

वह अनंत है और वह इस बात को निश्चित करता है कि उसकी संतान उसके साथ अनंत जीवन में हों।

परमेश्वर प्रेम है (1 यूहन्ना 4:8) और प्रेम कभी टलता नहीं (1 कुरिन्थियों 13:8)

और यही कारण है कि हम परमेश्वर अपने पिता से और उसके पुत्र यीशु मसीह से प्रेम करते हैं।

> हम इसलिये प्रेम करते हैं, कि पहले उसने हम से प्रेम किया। 1 यूहन्ना 4:19

इब्रानियों 9:12 ... अपने ही लहू के द्वारा, एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और **अनन्त छुटकारा** प्राप्त किया। 15 इसी कारण वह नई वाचा का मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा जो पहली वाचा के समय के अपराधों से छुटकारा पाने के लिये हुई है, **बुलाए हुए लोग प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास को प्राप्त करें।**

> हमारे **अनंत उद्धार के लिए – यह समाप्त कार्य है !**

.....

परन्तु उस "गर्जनेवाले सिंह" (1 पतरस 5:8) से मेरे **प्रति दिन के उद्धार** के लिए जो इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए ...

फिलिप्पियों 2:12-13 इसलिये हे मेरे प्रियो, जिस प्रकार (1) तुम सदा आज्ञा मानते आए हो, वैसा ही अब भी न केवल मेरे साथ रहते हुए पर (2) विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी (3) **डरते और काँपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ;** 13 क्योंकि परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है।

- **अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ** "अपने अपने उद्धार" – यह आपका है।
- **तुम सदा आज्ञा मानते आए हो** इसका अर्थ है कि उन्होंने **बुलाहट की आज्ञा मानी, विश्वास किया** और प्रभु के पीछे चले।

इब्रानियों 11:8 **विश्वास** ही से अब्राहम जब **बुलाया** गया तो **आज्ञा मानकर**

- विश्वास – एक संज्ञा है, और यह परमेश्वर द्वारा हमें प्राप्त होता है।
- विश्वास करना – एक क्रिया, एक क्रियाशील शब्द। क्रियाशीलता हमारी ओर से है।

- **विशेष करके ... अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ** हमें विशेष करके और भी अधिक (कार्य) करने को प्रोत्साहित किया गया है।

ऐसा जीवन जीएं जो परमेश्वर को आदर और महिमा देता हो।

अपने प्रेम, अपने आभार, उसके प्रति अपनी तारीफ़ को प्रकट करते और प्रदर्शित करते हुए कि उसने आपको पहले से ही चुना — आपको बुलाया — आपको धर्मी ठहराया — आपको बचाया और आपको महिमान्वित किया है।

और आप यह इसलिए करते हैं क्योंकि ...

- **परमेश्वर ही है जिसने** अपनी सुइच्छा निमित्त **तुम्हारे मन में** इच्छा और **काम**, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। यह स्पष्ट रीति से यह बताता है कि वे मसीही थे क्योंकि प्रभु परमेश्वर उनमें ... कार्य करता था ... अतः

फिलिप्पियों 2:14-15 सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया **करो**, ताकि तुम **निर्दोष और भोले** (अन्य लोगों की दृष्टि में) होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच **परमेश्वर के निष्कंलक सन्तान** बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में **जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो।**

- परमेश्वर की दृष्टि में आप पहले ही मेमने के **लहू** के कारण **निर्दोष और भोले** हैं, आप **धर्मी ठहराए** गए हैं (यहूदा 24, रोमियों 3:22-25)
- यह पद "उसके गवाह" (प्रेरितों के काम 1:8) होने के विषय में कि हम किस तरह का जीवन अब जीते हैं।

मत्ती 7:20 इस प्रकार उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे।

यूहन्ना 15:2-6 ... जो डाली **फलती है,** उसे वह छाँटता है (अक्षरशः शुद्ध करना) ताकि और फले। 3 तुम तो उस वचन के कारण जो मैं ने तुम से कहा है (जब उसने आपको बुलाया : 1 कुरिन्थियों 1:2), **शुद्ध हो।**

5 मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह **बहुत फल फलता है,** क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

8 मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।

परिपूर्ण हो जाओ, इस पर कार्य करो, अपने उद्धार को उसकी परिपूर्णता पर लाकर प्रदर्शित करो कि आप परमेश्वर की संतान हैं, एक मसीही (मसीह के समान) हैं।

आप वह बनें जो आप हैं ... सिद्ध करें कि आप यीशु के चेले हैं। उस परमेश्वर के उत्तम गुणों को प्रकट करें जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है (1 पतरस 2:9)।

यशायाह 61:10 मैं यहोवा के कारण अति आनन्दित होऊँगा, मेरा प्राण परमेश्वर के कारण मगन रहेगा; **(क्यों)** क्योंकि **उसने** मुझे उद्धार के **वस्त्र पहिनाए**, और **धर्म की चद्दर ऐसे ओढ़ा दी है** जैसे दूल्हा फूलों की माला से अपने आपको सजाता और दुल्हिन अपने गहनों से अपना सिंगार करती है।

आपके स्वर्गीय पिता ने ये सब इसलिए किया, क्योंकि :

आप उसकी संतान हैं। वह आपका ध्यान रखता है।

वह आपसे प्रेम करता है! आप उसके लिए विशेष और महत्वपूर्ण हैं।

ऐसा जीवन जीएं जो आपके पिता को महिमा दे और जिससे आपका पिता आप पर गर्व करे।

यीशु रखता अपनों का ध्यान

अब भी प्रभु यीशु अपने सिंहासन पर है विराजमान
प्रेम से भरकर रखता वह अपनों का ध्यान
हैं वायदे उसके सच्चे – करता वह आपसे प्रेम
अपनों का रखता हमेशा वह ध्यान

अब भी प्रभु यीशु अपने सिंहासन पर है विराजमान —अपनों के लिए वह करता राज
आपके आंसुओं को कुप्पी में भरकर रखता वह
आपके बालों की भी गिनती करता वह क्योंकि सचमुच रखता ध्यान वह
अपनों का है जलन रखने वाला वह निगेहबान

उसकी दृष्टि में हैं आप अनमोल — उसकी ज्योति के बहुमूल्य धन
आपके लिए उसने छोड़ा सिंहासन — आया अपनों के लिए

आपके लिए हुआ वह बलिदान — अपने लहू से आपको है पाया
उसका धन जो पाया
धरती से उसने छुड़ाया

विजय की ललकार के साथ, वह लौटा अपने सिंहासन
और अपनों के लिए रखता अपना दाहिना हाथ

है प्रतीक्षा उसे कि लाए हर एक को अपने स्थान
उसके सिंहासन के निकट, हैं उसके अनुग्रह के वो मुकुट
गर्व से प्रकट करता जिन्हें, हैं जो उसके अपने

नई दिल्ली, भारत अगस्त 24, 1993